शोध प्रतिवेदन

''उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन।''

निर्देशिका
श्रीमती राजू पंसारी
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री
पूजा खींची
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन हैं। वर्तमान समय में शिक्षा की गुणवत्ता को बढाना भी एक महत्वपूर्ण कार्य हैं। यदि हम शिक्षा की गुणवत्ता के विकास पर दृष्टिपात करेगें। तो देखेगें कि प्राचीन युग से लेकर वर्तमान युग तक मानव ने शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में संसाधनों में तीव्र गति से परिवर्तन किया हैं। अतः राष्ट्र के सुयोग्य नागरिकों के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा के औपचारिक साधनों के रूप में विद्यालय व कॉलेजो की भूमिका अतुलनीय हैं। विद्यार्थियों के शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं विद्यालय में उपलब्ध संसाधन हैं।

छात्र के मानसिक स्वास्थ्य के विकास में शिक्षा, शिक्षक व विद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। यदि विद्यालय वातावरण अनुकूल है तो छात्रों में अपेक्षित गुणों का विकास होगा। और वे जीवन में उत्तरोत्तर सफलता की सीढियां चढते जायेगें। तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का परचम लहरायेगें। परन्तु यदि विद्यालय वातावरण प्रतिकूल है तो छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य कुंठित हो जायेगा।

अतः शिक्षाशास्त्री फ्राबेल, वाटसन, न्यूमैन आदि ने बालक मानसिक स्वास्थ्य के विकास में विद्यालय वातावरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

''वातावरण द्वारा शारीरिक लक्षण सबसे कम प्रभावित होते है, बुद्धि उससे अधिक, शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्ति उससे भी अधिक व्यक्ति व स्वभाव सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।''

न्यूमैन

विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत भौतिक व मानवीय तत्वों को साध्य की प्राप्ति के लिए उपलब्ध व सुव्यवस्थित किया जाता हैं। विद्यालय वातावरण के अंतर्गत वे सभी व्यवस्थाएं आती हैं जो छात्र के मानसिक विकास में अहम हैं। जैसे – विद्यालय भवन, विद्यालय की दिनचर्या, अनुशासन, परीक्षा, निरीक्षण, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, विद्यालय का मैदान, विद्यालय के शिक्षक, विद्यालय की साफ–सफाई आदि।

अतः विद्यालय वातावरण ही वह स्थान है जहाँ हम बालक के मानसिक स्वास्थ्य के विकास का बीज बोकर बंजर भूमि को भी उत्पादक बना सकते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में भी विद्यालयों में विद्यालय वातावरण सृजित करने का निर्णय लिया गया।

अतः शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए इस समस्या का चयन किया गया।

अध्ययन का औचित्य

विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास में विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं। विद्यार्थी में मानवीय गुणों का विकास करने तथा उसे सुयोग्य व सुचरित्र नागरिक बनाने हेतु विद्यालय वातावरण महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। जिससे कि विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता हैं। विद्यालय वातावरण विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को विशेष रूप से प्रभावित करता हैं। अध्यापक का व्यक्तित्व पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएँ, शिक्षण विधियाँ तथा विद्यालय का सामान्य वातावरण आदि अनेक विद्यालय सम्बन्धी कारक हैं। जो बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं। विद्यालय ही वह स्थान होता हैं। जहाँ कि विद्यार्थी के मानसिक विकास

के अधिकतम अवसर प्राप्त होते हैं। इसी लिये शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना होता हैं। विद्यालय में शिक्षक तथा वातावरण की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका होती हैं। विद्यालय जो कि विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर विद्यार्थी के विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं।

विद्यालय का वातावरण समायोजित एंव सकारात्मक होगा तो यह वातावरण विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर विद्यार्थी के विकास में अपना सहयोग दे सकते हैं।

विद्यालय का वातावरण समायोजित एवं सकारात्मक होगा तो यह वातावरण विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा। जबकि नकारात्मक विद्यालय वातावरण विद्यार्थी के मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता हैं। जिससे विद्यार्थी मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाते हैं अतः विद्यार्थी का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध पाया जाता हैं। अतः शोधकर्त्री के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि क्या उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध पाया जाता हैं? अतः शोधकर्त्री ने इस समस्या का चयन किया हैं। समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित हैं। अतः शोधार्थी ने शोध समस्या के रूप में इस समस्या का चयन किया हैं।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित है–

(1) क्या उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध है?

(2) क्या उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध है?

(3) क्या माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध है?

(4) क्या माध्यमिक स्तर के छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध है?

3 समस्या कथन –

''उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन।''

बिना उद्देश्य के किसी भी कार्य की रचना करना समुचित रेत की दीवारें बनाने के सदृश्य हैं क्योंकि संस्कृत में कहा गया है कि ''प्रयोजन बिना मन्दोउपि न प्रवृर्तते'' अर्थात बिना किसी उद्देश्य के तो कोई मूर्ख भी प्रयत्न नही कर सकता हैं। संसार में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु कार्य में लगा रहता हैं। प्रत्येक अध्ययन के लिए न्यादर्श के चुनाव से लेकर प्राप्त निष्कर्षों तक समस्त प्रक्रिया का समाधान तभी हो सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नाकिंत उद्देश्य है–

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

(3) माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

(4) माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत निम्नांकित शून्य परिकल्पनाएं निर्धारित की गई हैं।

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं।

(3) माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही पाया गया हैं।

(4) माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं।

शोध अध्ययन का महत्त्व :–

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है और इन सबके विकास में विद्यालय के वातावरण तथा मानसिक स्वास्थ्य का महत्त्वपूर्ण योगदान होता हैं। छात्रों में मानसिक विकास, चारित्रिक विकास, सामाजिक विकास व सांवेगिक विकास को उत्पन्न करने में अर्थात सभी का विकास करने में विद्यालय का वातावरण काफी हद तक उत्तरदायी होता हैं। शारीरिक विकास का सम्बन्ध मानसिक विकास से रहा हैं। शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक व संवेगात्मक परिवर्तन भी होते हैं। इस प्रकार का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जब विद्यालय का सुनियोजित शिक्षागत वातावरण हो। भौतिक व मानवीय संसाधन ही नहीं विद्यालय वातावरण में विभिन्न पाठ्यान्तर क्रियाओं को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

विद्यालय ही वह स्थान है जो बालक को बनाने या बिगाड़ने के लिए उत्तरदायी होता हैं। प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में विद्यालय वातावरण और अन्य क्रियाकलापों का प्रभाव अवश्य पड़ता हैं। अगर विद्यालय का वातावरण अच्छा होगा तो विद्यार्थी एक कुशल नागरिक बनेगा उसमें अच्छी आदतें विकसित होगी। उसका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। जिससे विद्यार्थी के व्यवहार में कुशलता, सद्भावनापूर्ण समायोजन की भावनाओं से भरपूर होते हैं।

विद्यार्थियों को उनकी रूचि और आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करने देना चाहिए विद्यार्थियों को अधिकाधिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए उत्साहित करना चाहिए। तथा इस प्रकार विद्यार्थियों की समस्याओं को सुलझाकर उन्हें सुयोग्य नागरिक बनाया जा सकता हैं।

विद्यालय वातावरण के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध मील का पत्थर साबित हो सकेगा। विद्यालय वातावरण की न्यूवता व दिशाहीनता को परिलक्षित किया जा सकेंगा। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षागत वातावरण को अपव्यय व अवरोधन से मुक्त किया जा सकेंगा। छात्र के मानसिक विकास व विद्यालय वातावरण में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारकों को दूर करने में एक सफल प्रयास हो सकेंगा।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

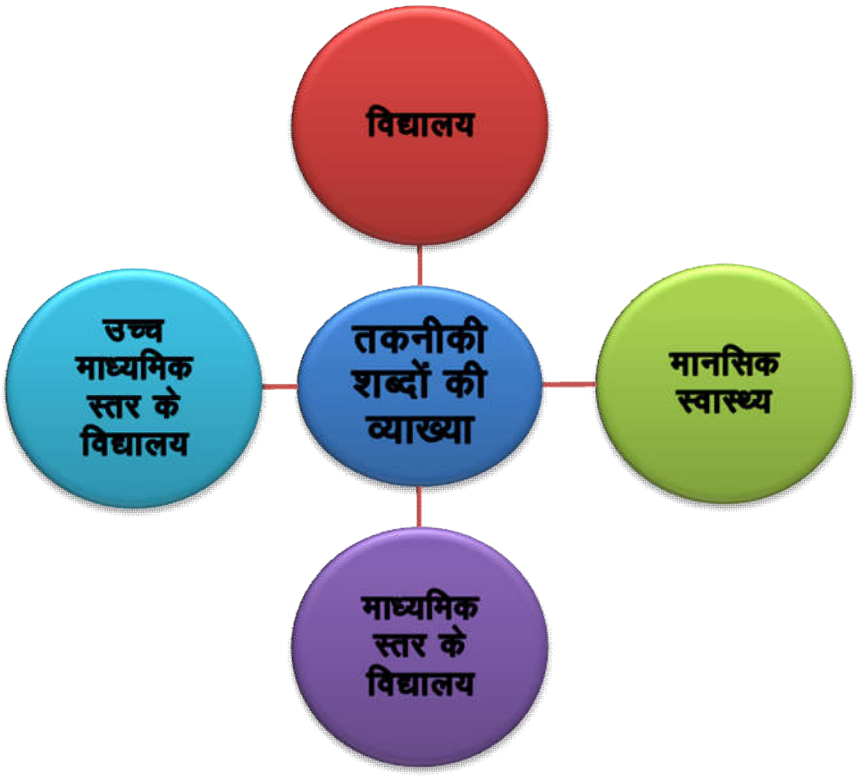

(1) **विद्यालय** :– विद्यालय वे संस्थाएँ है जहाँ पर अधिगम, पर्यावरण का निर्माण करके शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी के व्यक्तित्व को परिमार्जित करके उसके आन्तरिक एवं बाह्य शक्तियों का विकास करके समाज के लिए सभ्य नागरिक तैयार किये जाते हैं।

समाज के आदर्शों, मूल्यों, विचारों, परम्पराओं, आशाओं, अभिलाषाओं और आकांक्षाओं को जीवित रखने के लिए विद्यालय को शिक्षा का केन्द्र माना जाता हैं।

''विद्यालय सामुदायिक जीवन की अभिव्यक्ति है।''

हूमायुँ कबीर

''विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती हैं कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।''

जॉन ड्यूबी

(2) **मानसिक स्वास्थ्य** – मानसिक स्वास्थ्य का तात्पर्य मन के स्वस्थ रहने एवं विकार मुक्त होने से हैं। ऐसे व्यक्ति में संवेगात्मकता दृढ़ होती है और आत्मविश्वास कार्य में उत्साह तथा सामूहिक जीवन में रूचि होती हैं इसके लिए व्यक्ति को अपने तथा दूसरों के प्रति सम्मान की भावना रखनी चाहिये।

कुप्पूस्वामी के अनुसार :– मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ है– दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्त्वकांक्षाओं तथा आदर्शों में संतुलन रखने की योग्यता।

इसका तात्पर्य है– जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने तथा उनको स्वीकार करने की योग्यता।''

''सामान्य रूप से मानसिक स्वास्थ्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व की पूर्ण एवं सामंजस्य पूर्ण क्रियाशीलता हैं।''

हैडफील्ड

(3) **माध्यमिक स्तर के विद्यालय** :– ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण कराया जाता हैं माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यालय शैक्षिक संरचना की मध्यस्थ कड़ी हैं। इससे पहले प्राथमिक विद्यालय तथा बाद में उच्च विद्यालय के रूप में विश्व विद्यालय स्तर आते हैं।

कार्टर वी गुड के अनुसार :– ''माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह समय है, जो सामान्यतः 12 से 17 वर्ष की उम्र के बालक बालिकाओं के लिए होती हैं। इस काल में अध्ययन के प्रमुख उपकरणों का प्रयोग स्वामित्व अभिव्यक्ति वैचारिक स्वतंत्रता, विविध जानकारी प्राप्त करने, बौद्धिक, कुशलता, अभिरूचि और आदर्शों तथा आदतो के निर्माण पर बल दिया जाता हैं। भारत वर्ष के सन्दर्भ में माध्यमिक शिक्षा का काल 14 से 18 वर्ष की आयु का माना जाता हैं।

(4) **उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय** :– उच्च माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में अध्ययनरत उन छात्र–छात्राओं को उच्च माध्यमिक स्तरीय कहा जायेगा जिनकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य हो। यह पाठशाला का विभाजन का वह

भाग है जो माध्यमिक स्तर के बाद प्रारम्भ होता है जिसमें प्रायः कक्षा 11व 12 के विद्यार्थी सम्मिलित किये जाते हैं।

कक्षा 11 व 12 में अध्ययन करने वाले विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी कहलाते हैं। सामान्यतया कक्षा 11–12 तक आते–आते विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर जाते हैं। राजस्थान में कक्षा 10 के बाद विद्यार्थियों को अपना संकाय क्षेत्र यथा (कला, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि इत्यादि) चुनना होता हैं।

अनुसंधान की विधि :–

शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन हेतु शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के चर –

शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में अग्रलिखित स्वतत्रं चर एवं आश्रित चर प्रयुक्त किये गये ।

स्वतंत्र चर – विद्यालय वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य

आश्रित चर – विद्यार्थी

शोध अध्ययन में प्रदत्तों के स्त्रोत –

शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में प्रयुक्त प्रदत्तों के रूप में प्राथमिक स्त्रोत को प्रयुक्त किया गया हैं।

प्रदत्तो की प्रकृति –

शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन में शोध प्रदत्तों की प्रकृति के रूप में मात्रात्मक पद्धति को प्रयुक्त किया गया हैं।

परिसीमाएं –

क्षेत्र – शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन को जयपुर शहर तक ही सीमित रखा गया हैं।

स्तर – शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन हेतुउच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के 5 विद्यालय के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया हैं।

लिंग – प्रस्तुत अध्ययन छात्रों तथा छात्राओं दोनों पर किया गया।

विद्यार्थी – शोधकर्त्री द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य केवल उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों पर ही शोध किया गया हैं।

जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालय एवं उच्च माध्यमिक स्तर विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर किया गया हैं।

न्यादर्श :–

शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के 5 विद्यालय लिये गये।

शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 50 विद्यार्थी तथा उच्च माध्यमिक स्तर के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया हैं।

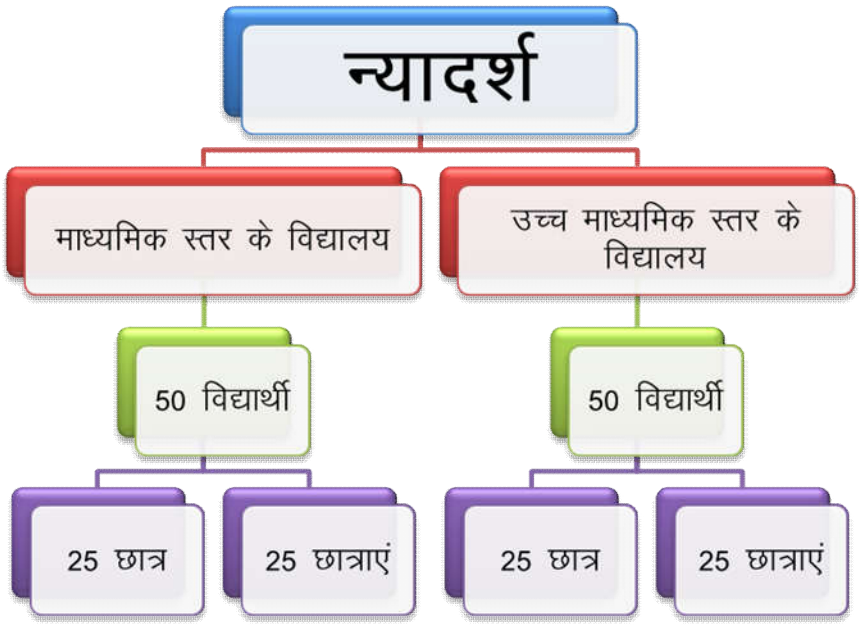

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

शोधकर्त्री द्वारा प्रयुक्त शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

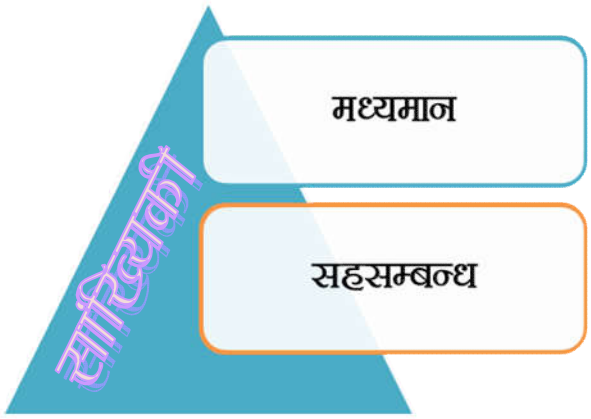

शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष

परीक्षणों से प्राप्त आंकडों का सांख्यिकी विधि से प्रयोग करके शोध विधि से सम्बन्धित निष्कर्षों को प्राप्त किया जाता हैं।

परिकल्पना –1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह सम्बन्ध नही पाया गया हैं।

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के 50 छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य मान क्रमशः 21.36 तथा 4.72 प्राप्त हुआ। उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध +0.77 प्राप्त हुआ। चूंकि +0.77 उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध को दर्शाता हैं। अतः प्रस्तुत शोध में परिकल्पना–1 उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष – कई विद्यालयों में कठोर अनुशासन रखा जाता हैं। और विद्यार्थियों को चुपचाप तथा शान्त रहने की आज्ञा दी जाती हैं। विद्यार्थियों पर इस प्रकार के कठोर का प्रभाव हानिकारक होता है और वे तरह–तरह के उपद्रव करते रहते हैं। अतः विद्यालय वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध पाया जाता हैं।

परिकल्पना – 2 उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर की 50 छात्राओं का विद्यालय वातावरण एंव मानसिक स्वास्थ्य के मध्य मध्यमान क्रमशः 20.96 तथा 4.64 प्राप्त हुआ। उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध +0.78 उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध को दर्शाता हैं। अतः प्रस्तुत शोध में परिकल्पना– 2 उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष – विद्यालयों में होने वाली परीक्षाएँ भी विद्यार्थियों के समायोजन पर अवांछनीय प्रभाव डालती हैं। परीक्षाएँ विद्यार्थियों की प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करती हैं। प्रथम श्रेणी के छात्र अपने आप को ऊँचा समझने लगते हैं। तृतीय और द्वितीय श्रेणी के छात्र अपने आप को बहुत हीन समझने लगते हैं अतः वे हर समय तनाव की स्थिति में रहते हैं।

अतः विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध पाया जाता हैं।

परिकल्पना –3 माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 50 छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य मध्यमान क्रमशः 20.96 तथा 5.04 प्राप्त हुआ। माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध +0.96 प्राप्त हुआ। चूंकि +0. 96 उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध को दर्शाता हैं। अतः प्रस्तुत शोध में परिकल्पना 3 माध्यमिक स्तर के छात्रों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सह–सम्बन्ध नही पाया गया हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष – अध्यापक अध्यापिकाओं के स्वभाव और व्यवहार का प्रभाव भी विद्यार्थियों के समायोजन पर पड़ता हैं। यदि अध्यापक अध्यापिका का व्यवहार कठोरतापूर्वक या अपेक्षायुक्त होगा तो विद्यार्थियों पर इसका प्रभाव अच्छा नही पड़ेगा। इसके

कारण विद्यार्थियों में हीन भावना आ जाती हैं। अतः विद्यार्थियों का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह सम्बन्ध पाया जाता हैं।

परिकल्पना – 4

माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया हैं।

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर की 50 छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य मध्यमान क्रमशः 20.64 तथा 5.36 प्राप्त हुआ। माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध +0.95 प्राप्त हुआ। चूंकि +0.95 उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध को दर्शाता हैं। अतः प्रस्तुत शोध में परिकल्पना–4 माध्यमिक स्तर की छात्राओं का विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य उच्च धनात्मक सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया हैं। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष – अनुप्रयुक्त पाठ्यक्रम का भी विद्यार्थियों पर दुष्प्रभाव पड़ता हैं। वे पढ़ाई से ऊब कर तोड़–फोड़ के कार्यों में भाग लेने लगते हैं। यदि पाठ्यक्रम कक्षा–स्तर से कठिन होता है, तो विद्यार्थियों को अध्ययन में कठिनाई आती हैं। ऐसे छात्र कक्षा से भाग जाया करते हैं। तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बूरा प्रभाव पडता है अतः विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

शैक्षिक निहितार्थ –

शिक्षा शास्त्र, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान आदि विषयों से सम्बन्धित शोध प्रयास तब तक अर्थपूर्ण नही होते जब तक कि इनका सम्बन्धित क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ न हो, नही तो शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोधकार्य व्यर्थ चला जाता हैं। अतः प्रस्तुत शोध के शिक्षा में निम्नलिखित निहितार्थ होगें।

शिक्षण संस्थान व प्रबन्धन – शिक्षण संस्थान व प्रबन्धन इस प्रकार के विद्यालय वातावरण का निर्माण कर सकेंगे जो बालकों के स्तर के अनुरूप हों व अपने विद्यालय के शिक्षागत वातावरण गुणवत्ता प्राप्त कर सकेगें। जिससे वे बालकों

का मानसिक विकास कर सकेगें। शिक्षण संस्थान अपने विद्यालय के भौतिक मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता को भी बढ़ा सकेगें।

विद्यार्थी – प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध विद्यार्थियों को विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सजग कर सकेगा व विद्यार्थी भौतिक व मानवीय संसाधनों के प्रति जागरूक हो सकेगें। वे जान सकेगे कि अच्छा विद्यालय वातावरण किस प्रकार से मानसिक स्वास्थ्य का विकास कर सकता हैं।

प्रधानाचार्य शिक्षक व शिक्षा व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों के निहितार्थ :– प्रधानाचार्य शिक्षक, प्रशिक्षक व शिक्षा व्यवसाय से जुडे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष विभिन्न व्यक्ति विद्यालयों का शिक्षागत वातावरण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अनुरूप प्रकार निर्मित कर सकेगें जिससे छात्र का मानसिक विकास हों सके। विद्यालय वातावरण को उच्च गुणवत्ता युक्त भौतिक व मानवीय संसाधनों से युक्त बन जायें। अतः इनमें सुधार कर विद्यार्थियों को भावी जीवन हेतु नई दिशा प्रदान कर उनका मानसिक विकास को सही दिशा दी जा सकती हैं।

आगामी अध्ययन हेतु सुझाव –

(1) भविष्य में इसे व्यापक करते हुए बड़े न्यादर्श का चयन कर इसका विस्तृत अध्ययन किया जा सकता हैं।

(2) भावी अनुसंधान में उच्चस्तर अर्थात कॉलेज स्तर पर महाविद्यालयों के वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

(3) भावी अनुसंधान शहरी व ग्रामीण विद्यालयों के विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

(4) भावी अनुसंधान केन्द्रीय व निजी विद्यालयों के विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

(5) भावी अनुसंधान में सामाजिक, आर्थिक स्तर के आधार पर विद्यालय वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सह–सम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता हैं।

उपसंहार –

प्रस्तुत अध्याय में पूर्व के चार अध्यायों को सारांश रूप में प्रस्तुत किया गया हैं। प्रस्तुत शोध के परिणामों को अन्तिम सत्य नही माना जाए। क्योंकि कोई भी ग्रन्थ अपने आप में पूर्ण नही होता। इसमें कुछ ना कुछ त्रुटि होने की सम्भावनाएं अवश्य होती हैं। अतः शोधकर्त्री ने यह आशा व्यक्त की हैं कि यदि ये लघु शोध प्रबन्ध आगे अन्य अनुसंधानकर्त्ताओं को अध्ययन हेतु प्रेरित कर शिक्षा